शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों के छात्राध्यापकों की सांवेगिक परिपक्वता का अध्ययन"।

@[1] Dr. Devki Nandan Sharma, Principal, M.S.S.T.T. College, Bharatpur Raj. deenuvs@gmail.com

शोध सार

छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य एवं सांवेगिक परिपक्वता पर अध्यापक का सर्वाधिक प्रभाव पड़ता है। एक अध्यापक की सांवेगिक स्थिरता पर ही छात्रों के संवेगों का स्वस्थ विकास आधारित है। प्रस्तुत शोध प्रपत्र में शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों के छात्राध्यापकों की सांवेगिक परिपक्वता का अध्ययन किया गया है। इस अध्ययन हेतु सकारात्मक परिकल्पना "शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों के छात्राध्यापक सांवेगिक रूप से परिपक्व हैं। " का निर्माण किया। न्यादर्श के रूप में 4 शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों के 200 छात्राध्यापकों का चयन किया गया। प्रदत्त संकलन हेतु शोधकर्ता द्वारा डा. महेश भार्गव एवं डा. यशवीर सिंह द्वारा निर्मित सांवेगिक परिपक्वता मापनी का प्रयोग किया गया। निष्कर्षतः पाया कि लगभग 73% छात्राध्यापक स्थिर संवेग वाले हैं व 27% छात्राध्यापक अस्थिर संवेग वाले हैं।

कूट शब्दावली: शिक्षक, प्रशिक्षण, महाविद्यालय, छात्राध्यापक, सांवेगिक परिपक्वता

प्रस्तावना

छात्र का सबसे निकटतम सहयोगी एक अध्यापक ही होता है। बालक अपने अध्यापक को ही आदर्श मानकर चलता है। एक अध्यापक की बात चाहे अच्छी हो या बुरी उसे प्रभावित करती है। आजकल छात्र तथा अध्यापक सम्बन्धों मे तनाव दिन–प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है। जिससे उनके बीच दूरियाँ बढ़ रही हैं। अतः छात्रों की सांवेगिक परिपक्वता पर अध्यापक का सर्वाधिक प्रभाव पड़ता है।

सांवेगिक परिपक्वता से तात्पर्य उस योग्यता से है जिसमें व्यक्ति अपनी भावनाओं या संवेगों क्रोध, दया, भय, घृणा, आश्चर्य, वात्सल्य, स्नेह, विषाद,, कामुकता तथा भूख इत्यादि पर नियन्त्रण रखते हुए ; संवेगों की अभिव्यक्ति समाज के नियम और आचरण संहिता को ध्यान में रखकर करता है।

सांवेगिक परिपक्वता को और अधिक अच्छी तरह समझने के लिए Aurthur T. Jersild की परिभाषा इस प्रकार है– 'सांवेगिक परिपक्वता द्वारा शक्तियों के विकास और उनको अच्छी तरह से उपयोग में ला सकने की बात कहनी चाहिए। अपने विस्तृत अर्थ में संवेगात्मक परिपक्वता यह संकेत करती है कि किसी सीमा तक व्यक्ति ने अच्छी तरह जीने के लिए अपनी शक्तियों और योग्यताओं को पहचानकर उन्हें विभिन्न वस्तुओं का उपभोग कर सकने तथा दूसरों के साथ प्रेम और सहानुभूति दिखाने या सुख–दुख बांटने आदि कार्यों में ठीक प्रकार से प्रयोग में लाना सीखा है।' इस प्रकार की क्षमताओं का विकसित होना सांवेगिक परिपक्वता का चिन्ह है।

Walter D Smitson (1974) "Emotional maturity is a process in which the personality is continuously striving for greater sense of emotional health both Intra-psychically and Intra-personally."

उपरोक्त परिभाषाओं के आधार पर सांवेगिक परिपक्वता का अर्थ मात्र प्रतिबन्ध या अंकुश लगाना ही नहीं है अपितु सामाजिक आचार संहिताओं को ध्यान में रखते हुए संवेगों का उचित नियन्त्रण है।संवेगात्मक रूप से परिपक्व व्यक्ति की कुछ विशेषताएं इस प्रकार हैं–

- संवेगों की अभिव्यक्ति समय व स्थिति को ध्यान में रखकर करता है।
- प्रायः ऐसे व्यक्ति में अनिश्चय की स्थिति का अभाव पाया जाता है।
- संवेगों को व्यर्थ में प्रकट नहीं होने देता।
- भावनाओं और संवेगों के प्रवाह में न बहकर अपनी बौद्धिक और मानसिक शक्तियों का ठीक से प्रयोग करता है।
- स्वाभिमान से युक्त होता है।
- धैर्यशाली होता हैं।
- विपत्तियों से भयभीत न होकर उनका सामना करता है।
- ऐसे व्यक्ति में आत्म ग्लानि का अभाव रहता है।
- जल्दी क्रोधित नहीं होता।
- अपनी जिम्मेदारियों को समझता है।
- दूसरों की कमियाँ नहीं निकालता।
- हर सवाल का जबाव हाँ या ना में देने की क्षमता रखता है।

उपरोक्त परिभाषाओं और विशेषताओं के आधार पर हम कह सकते हैं कि ''सांवेगिक परिपक्वता से तात्पर्य उस योग्यता से है जिसमें व्यक्ति अपनी भावनाओं और संवेगों द्वारा नियन्त्रित न होकर अपनी भावनाओं और संवेगों को नियन्त्रित करता है। यह व्यक्ति द्वारा स्वस्थ आलोचना स्वीकार करने आत्मग्लानि के अभाव क्रोध पर नियन्त्रण जिम्मेदारी के एहसास धैर्य अनिश्चय की स्थिति के अभाव एवं आपात्कालीन परिस्थितियों का सकारात्मक रूप से सामना करने से सम्बन्धित है।

किसी भी सभ्य समाज की पहचान उसके व्यवहार से होती है। कोई भी व्यक्ति अगर उन्नत या खुश है तो उसका कारण सांवेगिक परिपक्वता है। इस प्रकार सिद्ध होता है कि किसी भी व्यक्ति के उत्थान में उसकी सांवेगिक परिपक्वता का महत्वपूर्ण योगदान होता है। आधुनिक समय में छात्रों के सामने अनेक समस्याएं आ रही है। इस दशा में आवश्यक है कि छात्रों को उचित सहयोग प्राप्त हो। इसी बात को ध्यान में रखते हुए छात्रों के सांवेगिक परिपक्वता का अध्ययन करने का निर्णय लिया गया।

समस्या कथन

" शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों के छात्राध्यापकों की सांवेगिक परिपक्वता का अध्ययन"।

शोध के उद्देश्य

शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों के छात्राध्यापकों की सांवेगिक परिपक्वता का अध्ययन करना।

शोध परिकल्पना

शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों के छात्राध्यापक सांवेगिक रूप से परिपक्व हैं।

शोध विधि

प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्ता द्वारा **सम्प्रत्यात्मक अभिकल्प सर्वेक्षण विधि** का उपयोग किया गया है।

न्यादर्श

शोधकर्ता ने प्रस्तुत अध्ययन में न्यादर्श के रूप में 4 शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों के 200 छात्राध्यापकों का चयन किया गया है।

शोध उपकरण

प्रस्तुत शोध शोधकर्ता द्वारा डा. महेश भार्गव एवं डा. यशवीर सिंह द्वारा स्नातक स्तर के छात्राों के सांवेगिक परिपक्वता के स्तर की जाँच के लिये निर्मित सांवेगिक परिपक्वता मापनी का प्रयोग किया गया।

छात्राध्यापकों की सांवेगिक परिपक्वता का अध्ययन

छात्राध्यापकों की सांवेगिक परिपक्वता का अध्ययन करने के लिए डा. यशवीर सिंह व डा. महेश भार्गव द्वारा निर्मित व प्रमापीकृत सांवेगिक परिपक्वता मापनी को 200 छात्रों पर प्रशासित करके आकड़ें प्राप्त किये गये। प्राप्त आकड़ों का मात्रात्मक वर्गीकरण करके एवं प्रत्येक वर्ग अन्तराल में छात्राध्यापकों का प्रतिशत ज्ञात करके विभिन्न सांवेगिक परिपक्वता स्तरों पर व्यवस्थापन किया गया, जो इस प्रकार है–

सारिणी संख्या 1

छात्राध्यापकों की सांवेगिक परिपक्वता का स्तर

सांवेगिक परिपक्वता का स्तर	वर्ग अन्तराल	छात्राध्यापक संख्या	%
अत्यधिक स्थिर संवेग	50–80	70	70%
स्थिर संवेग	81–88	73	73%
अस्थिर संवेग	89–106	27	27%
अत्यधिक अस्थिर संवेग	107–240	10	10%

निष्कर्ष एवं व्याख्या

सारिणी संख्या 1से यह स्पष्ट है कि 70% छात्राध्यापक अत्यधिक स्थिर संवेग के, 73% स्थिर संवेग के, और 27% अस्थिर संवेग के एवं 10% छात्राध्यापक अत्यधिक अस्थिर संवेग वाले पाये गये।

अतः उपरोक्त विष्लेषण से यह स्पष्ट है कि अधिकांश छात्राध्यापक लगभग 73% स्थिर संवेग वाले हैं व 27% छात्राध्यापक अस्थिर संवेग वाले हैं। अतः द्वितीय परिकल्पना आंशिक रूप से स्वीकृत की जाती है।

संवेगात्मक अस्थिरता, व्यक्तिगत, पारिवारिक, आर्थिक, सामाजिक महाविद्यालयीय व्यवस्था, कक्षा वातावरण, अध्यापक व्यवहार, सहपाठियों से सम्बन्ध या किसी अन्य कारण से संभव हो सकती है। तथा परिस्थिति अनुरूप स्थायी व अस्थायी भी हो सकती है।

आरेख संख्या 1

छात्राध्यापकों की सांवेगिक परिपक्वता का स्तर

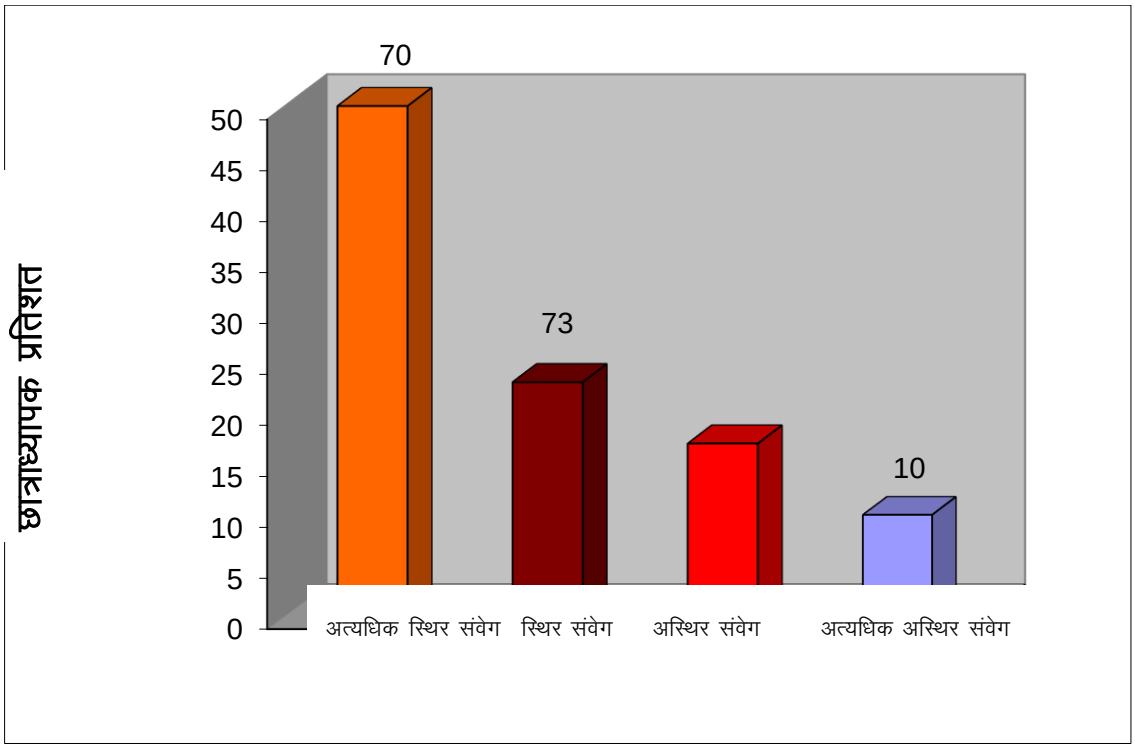

सन्दर्भ

- Malliick R.& Singh A.& Chaturvedi, P. & Kumar, N. "A Study on Higher Secondary Students Emotional Maturity and Achievement". International Journal of Research & Development in Technology and Management Science Kalish, Vol.21(1), pp.6-9, 2014.
- Bansibihari, P., and Surwade, L., (2006), "Effect of Emotional Maturity on the Effectiveness of Teacher." Edutracks, Neelkamal Publication Private Limited Hyderabad, vol. 6, No. 1, pp. 37-38.
- Chamberlain, V.C., (1960), "Adolescence to Maturity." The Badley Head, London.
- Dr. Nibedita Priyadarshani (2018) Emotional maturity among adolescents International Journal of Advance Engineering and Research Development, Volume 5, Issue 07, July -2018
- मगंल, एस. के., (2009) शिक्षा मोविज्ञान, पी.एच.आई. लर्निंग। प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली
- पाठक, आर. पी. (2011). उच्च शिक्षा मनोविज्ञान, पियर्सन, दिल्ली ।
- गुप्ता, डा. एस. पी. आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद, 1998
- पाण्डेय, डा. के. पी. शैक्षिक अनुसन्धान, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 2006
- सुखिया, एस. पी. तथा मल्होत्रा वी. पी. शैक्षिक अनुसन्धान के मूल तत्त्व, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा
- तिवारी, डा. गोविन्द शैक्षिक एवं मनोवैज्ञानिक अनुसन्धान के मूलाधर, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा
- सिंह ए. के. शिक्षा में अनुसन्धान, पोइन्टर पब्लिशर्स, 2005